Sr VI
CORE-13

TYPE OF SCHIZOPHRENIA

असामान्य मनोविज्ञान मानसिक बिमारी का अध्ययन करता है। ये मानसिक बिमारीयां अनेक है सधारणतया इन्हे दो श्रेणियों में बांटा गया जिसे Psychoneurosis तथा Psychosis कहा जाता है। पुनः Psychosis के भी दो भाग होते है जिसे organic Psychosis आंगिक मनोविकृति तथा functional Psychosis क्रियात्मक मनोविकृति कहा जाता है। organic Psychosis में स्नायुमंडल के गड़बड़ी की प्रधानता रहती है। जबकि function Psychosis का मुख्य कारण मस्तिष्कीय क्षति नही वरन दोषपूर्ण वंशानुक्रम, जीवन की कुछ अभिघातिक अनुभूतियां तथा अतृप्त अतृप्त लैंगिक इच्छाए है जिसका मुख्य आधार मनोवैज्ञानिक होता है। Functional Psychosis के तीन प्रमुख प्रकार होते है - (i) schizophrenia (ii) Paranoia (iii) Manic depressive। प्रश्नानुसार यहां सिर्फ मनोविदिलता के प्रकार पर ही प्रकाश डालना है।

उपचारात्मक दृष्टिकोण से इसे कई श्रेणियों में विभक्त किया गया है। Cokman ने APA के अनुसार इसके आठ प्रकार बताए जो निम्नलिखित है -

1. SIMPLE SCHIZOPHRENIA - सरल मनोविदिलता - मनोविदिलता का यह प्रकार कुछ ऐसा है जिसे पहचान करना थोड़ा कठिन हो जाता है। क्योकि इसमे मनोविदिलता के बहुत कम लक्षण स्पष्ट होते है। इस प्रकार का आगमन धीरे-2 तथा किशोरावस्था मे होता है। इस संदर्भ मे Kant ने 1948 मे 64 रोगियों का अध्ययन कर इसके लक्षण का वर्णन किया। इसके रोगी वातावरण के प्रति उदासीन हो जाते है ये एकांतप्रिय, हां और नही में बातें करना, दोस्तों से मिलने मे कतराना, सामाजिक उत्सवों से दूर रहना, सफलता या असफलता से प्रभावित नही होना अपने रख-रखाव तथा श्रृंगार पर ध्यान नही देना, गंदे कपड़े पहनना, नहाने, धोने से दूर रहना जैसे अनेक लक्षणों के अलावे मे सदा कल्पना की दुनिया मे खोए रहते है। ये निराशावादी, चिड़चिड़ा तथा परावलंबी स्वभाव के होते है। इसमे कुछ रोगी अपराधी दुर्व्यसनी तथा वेश्यागामी प्रवृति के होते है।

2. ~~HYPHREI~~ HEBEPHRENIC SCHIZOPHRENIA - हेबेफ्रेनिक मनोविदिलता

इस प्रकार के रोगी का लक्षण मनोविदिलता के अन्य रोगी के लक्षण से भिन्न, भयंकर तथा विकराल होता है। अध्ययनों

Scanned with CamScanner

से स्पष्ट होता है कि जीवन के प्रारंभिक अवस्था से ही ये लक्षण देखने को मिलते है और जैसे-2 रोग की प्रबलता बढती जाती है इनके लक्षण विकराल स्वरूप के होते जाते है इसका रोगी अपने को महान तथा अवतारी पुरुष समझता है इसमें अपराधी व्यामोह की प्रधानता पायी जाती है। इनका चिंतन असंगठित काल्पनिक तथा बचकाने स्वरूप का होता है इन्हे यह भी भ्रम हो जाता है कि इनके दुश्मन एक बार नही वरन कई बार इनकी हत्या कर चुके है जबकि कुछ रोगी को यह विश्वास हो जाता है कि इनमें कुछ जहरीली गैस है मुंह खोलने पर ये बाहर निकलकर लोगों की हत्या कर सकते है इसलिए ये अपना मुंह बंद रखते है। इनमे अनेक प्रकार के विभ्रम के लक्षण भी पाए जाते हैं। कुछ रोगी मृत व्यक्ति, देवी-देवता या भगवान का नित्य दर्शन करते है तो कुछ रोगी बाह्य प्रकार का गंध तथा रसास्वादन लेते है। कुछ रोगी को विचित्र संगीत भी सुनायी पडती है तो कुछ को भयानक आवाज सुनायी पडती है। इनका ID अधिक मजबूत होता है, Ego तथा Super ego कमजोर तथा विकृत स्वरूप का होता है तथा इसे नींद भी नही आती।

3. CATATONIC SCHIZOPHRENIA - कैटाटोनिक मनोविदिलता - यह भी मनोविदिलता का एक प्रकार है। इसके लक्षण अचानक तथा बडे ही नाटकीय ढंग से उपस्थित होता है। इसके रोगी का भी संबंध वास्तविकता से टूट जाता है और व्यवहार इनकी भावनाओं से प्रभावित होने लगता है ये निर्देशानुसार कभी कार्य नही करते यदि करते भी है तो निर्देश का पूर्ण अनुसरण नही करते। इसके रोगी के शारीरिक स्थिति मे भी प्रत्यक्ष परिवर्तन दिखायी देता है यह अपना शरीर काफी कड़ा कर लेता है तथा कसकर मुट्ठी बांध लेता है या तो शरीर को काफी लचीला बना लेता है। कभी-2 इसके रोगी बेहोश भी हो जाते है लेकिन मुर्च्छित अवस्था में इनका चेहरा काफी शांत रहता है। उत्तेजित होने पर आक्रमण भी कर देते है जोर-२से ये निरर्थक तथा बेतुकी बातें करने लगते हैं। इनके अनेक व्यवहार भी सामाजिक दृष्टिकोण से गलत होते है। ये समाज मे बैठकर हस्तमैथुन करने लगते है। ये अन्य व्यामोह के शिकार रहते है लेकिन दंडात्मक व्यामोह की प्रधानता अधिक रहती है।

Scanned with CamScanner

4. PARANOID SCHIZOPHRENIA – स्थिर व्यामोही मनोविदलिता – यह भी मनोविदलिता का एक ऐसा प्रकार है जिसका आगमन 25 या 40 वर्ष की अवस्था मे होता है। इसके रोगी संदेही स्वरूप के होते है इनके विचार बेतुका, अतार्किक तथा निरर्थक होता है। इनमे अनेको प्रकार के व्यामोह पाए जाते है जिसमे अपराधी व्यामोह की प्रधानता अधिक रहती है जो इनके अधिकांश व्यवहारों का संचालन एवं नियंत्रण करती है। इनमे महानता के व्यामोह पाए जाते है ये अपने आप को संसार का महान दार्शनिक, बहादुर तथा दानी व्यक्ति समझते है। इनमे श्रवण तथा दृष्टि विभ्रम भी पाया जाता है रोगी अपने को भूत-प्रेत तथा अन्य दैविक शक्तियों से घिरा हुआ पाता है वह अपने को स्वर्ग की अप्सराओं तथा नरक की दुरात्माओं से सीधे बातचीत करते हुए पाता है यानि इसके रोगी को अनेक प्रकार की अलौकिक आवाजें भी सुनायी पड़ती है जिसे वह सत्य मानकर तोड़-फोड़ तथा मार-पीट जैसा विभत्स व्यवहार भी करने लगता है। इस रोगी की एक प्रमुख विशेषता यह है कि अधिकतर स्त्रियों की काल्पनिक दुश्मन स्त्रियां तथा पुरुषों का पुरुष ही होता है।

5. CHILDHOOD SCHIZOPHRENIA – बाल्यकालीन मनोविदलिता –

साधारणतः लोगों का ऐसा विश्वास था कि किशोर तथा जवानी की अवस्था मे ही लोग मानसिक रोग के शिकार होते है लेकिन Benjamin Rush ने 1812 मे अपने अध्ययनों के आधार पर बताया कि बच्चे भी मानसिक रोगों से ग्रसित होते हैं। Bender ने भी अपने अध्ययनोपरांत बताया कि बाल्यकालीन मनोविदलिता के रोगी मे अपनी पहचान के प्रति अज्ञानता रहती है ये अपने अभिभावक को भी पहचान सकने मे असमर्थ रहते है। वास्तविकता से इनका कोई संबन्ध नही रहता। इनका Ego भी अपरिपक्व रहता है। इनमे चिंतन, सहनशीलता तथा समाजिकता का सदा अभाव पाया जाता है। ये आक्रामक स्वभाव के तथा इनके विचार असंगठित होते है।

6. UNDIFFERENTIATED SCHIZOPHRENIA – अभिन्न मनोविदलिता –

यह मनोविदलिता प्रकार अन्य प्रकारों से काफी भिन्न है। इस अभिन्न मनोविदलिता पर प्रकाश डालते हुए मनोवैज्ञानिकों ने इसे दो श्रेणियों मे विभक्त किया है- एक को तीव्र अभिन्न मनोविदलिता कहते है इसके रोगी मे मनोविदलिता के लक्षण शीघ्र स्पष्ट होते है तथा शीघ्र ही दूर भी हो जाते है। इसका रोगी आतंकित तथा घबड़ाया

हुआ रहता है कौतुहल प्रश्न करता है अब कोई उसके प्रश्नों का उत्तर देता है तो उसे संदेह की नजर से देखता है। इसमें व्यक्तित्व लोप का भाव पाया जाता है इनके विभ्रम तथा व्यामोह अधिकतर यौन तथा धर्म से संबंधित रहते है।

दूसरे प्रकार को दीर्घकालीन [illegible] मनोविदलता कहते है। जिसमे मनोविदलता के अनेकों प्रकार के मिले जुले लक्षण पाए जाते है।

7. SCHZO-AFFECTIVE SCHIZOPHRENIA - मनोभावात्मक मनोविदलता - यह भी मनोविदलता का एक खास प्रकार है। इसमे रोगी के व्यवहार तथा चिंतन मे विचित्रता पायी जाती है। इनमे विषाद तथा उल्लास के लक्षण भी देखे जाते है। इनका संवेगात्मक जीवन अस्त-व्यस्त पाया जाता है इसके रोगी इतने भयानक हो जाते है कि वे अपने तथा पराये किसी को भी हानी पहुंचाने से नही हिचकते। वे इतने हिंसक हो जाते है कि इनपर नियंत्रण रखना काफी कठिन हो जाता है।

8. BESIDWAL SCHIZOPHRENIA - अवशिष्ट मनोविदलता - यह अंतिम मनोविदलता प्रकार है। जिसमे रोगी चंगा होकर अस्पताल से लौट आते है और पारिवारिक तथा सामाजिक समायोजन स्थापित करना प्रारंभ कर देते है। फिर भी इनमे मनोविदलता के कुछ लक्षण शेष रह जाते है तो ऐसे रोगी को इसी श्रेणी मे रखा जाता है।

इसप्रकार देखते है कि उपचारात्मक दृष्टिकोण से मनोविदलता के आठ प्रकार है। ये सभी प्रकार लक्षण के आधार पर बनाए गए है। किसी रोगी में ये आठो प्रकार के लक्षण तो किसी मे किसी एक प्रकार के लक्षण मौजूद रहते है जो उपर वर्णित है।

8/5/2018